अंतरात्मा

श्रीमती चन्द्रकान्ता भटनागर
गंगा एंक्लेव, रूड़की

अंतरात्मा के आदेश सब मनुष्यों को सब समय प्रभु की ओर से मिलते रहते हैं, पर हम ही उनकी उपेक्षा कर देते हैं और उलझन, ईर्ष्या, परनिन्दा, अहमन्यता, असहिष्णुता, मलीनता और अज्ञान से घिर जाते हैं, इसलिए दुःख, अशान्ति, घृणा, द्वेष और प्रतिस्पर्धा बढ़ रहे हैं। जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद सर उठा रहे हैं। ब समय प्रभु की ओर से मिलते रहते हैं, पर हम ही उनकी उपेक्षा कर देते हैं और उलझन, ईर्ष्या, परनिन्दा, अहमन्यता, असहिष्णुता, मलीनता और अज्ञान से घिर जाते हैं, इसलिए दुःख, अशान्ति, घृणा, द्वेष और प्रतिस्पर्धा बढ़ रहे हैं। जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद सर उठा रहे हैं।

मनुष्य यह भूलता जा रहा है कि समस्त विश्व का अस्तित्व संवेदनाओं के कारण है, वह यह भी भूलता जा रहा है कि संवेदनशील को ही सही दृष्टि मिलती है, उन्हें ही मानवता की तड़प दिखाई देती है।

जिस मानव का मन संवेदनशील है उसे महामानव बनते देर नहीं लगती, संवेदनशील व्यक्ति का चिन्तन भी श्रेष्ठ ही होगा, ऐसा व्यक्ति समस्त मानव जाति के उत्थान की ही बात सोचेगा, क्योंकि संसार के ज्यादातर महापुरूष मानसिक शक्ति के बल पर ही लक्ष्य तक पहुँचे, चाहे उनके पास धन बल, शारीरिक बल कम या ज्यादा क्यों न रहा हो, परमात्मा भी ऐसे सरल हृदय, श्रमरत शुभ कर्म करने वालों की सहायता के लिए निरन्तर तत्पर दिखते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात इस देश ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है पर इस प्रगति-विकास की शुरूआत स्वतंत्रता से पहले ही हो चुकी थी पूरे भारत भर में ऐसे हजारों उदाहरण हमें मिल जायेंगे। ऐसी ही एक मिसाल है महामना सेठ प्रताप अग्रवाल जी की, सन् 1971 में मैने बारहवीं कक्षा में प्रवेश लिया था उन दिनों यह कक्षा पूना बोर्ड के अंतर्गत प्री बोर्ड कहलाती थी, उसी समय मेरे उस कालेज का रजत जयन्ती समारोह भी मनाया जा रहा था, मेरे छोटे से शहर अमलनेर, जिला जलगाँव में यह एक मात्र कॉलेज था इसमें सह शिक्षा की सुविधा थी और यह पूना युनिवर्सिटी से संबद्ध था। कला, विज्ञान, वाणिज्य सभी संकायों की स्नात्कोत्तर तथा कुछ विषयों की पी.एचडी. तक सुविधा थी, इस विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय था महामना सेठ प्रताप अग्रवाल जी को, सेठ जी निस्संतान थे, सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति, उन्होंने केवल इस विश्वविद्यालय की स्थापना नहीं की अपितु इससे पहले अपनी जमा पूँजी से एक स्पिनिंग एण्ड विवींग मील की स्थापना की थी इसके पश्चात मील में काम करने वाले मजदूरों के रहने के लिए चॉलों का निर्माण किया पाठशाला खुलवाई थी, इसके पश्चात उन्होंने विद्यार्थियों के लिए प्रताप उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की भी स्थापना की वे रूके नहीं और उन्होंने एक भव्य राम मन्दिर और प्रताप चॅरीटेबल हॉस्पिटल भी बनवाया साथ-साथ, पास की दो तहसीलों में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्थापित किए और आगे चलकर अपनी विद्ववत्ता का परिचय देते हुए उन्होंने दर्शन शास्त्र के अध्ययन के लिए फिलासॉफी सेंटर की भी स्थापना की यह सेंटर भारत के गिने चुने सेंटरों में से एक है।

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

सेठ जी के कार्य से प्रेरित होकर शहर के कुछ धनवान प्रतिष्ठित किसान आगे बढ़े और उन्होंने भी विद्यार्थी और विद्यार्थिनियों के उच्चतर शिक्षा के लिए भवन बनाए और सारी व्यवस्था की, उनमें लड़कों के लिए कक्षा 5 से ग्यारहवीं तक की शिक्षा तथा सर गंगाराम सखाराम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा लड़कियों की शिक्षा के लिए श्रीमती द्रौपदी रामचन्द्र भांडारकर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आज भी हजारों विद्यार्थियों के जीवन में ज्ञान विज्ञान की रोशनी भर रहे हैं, हजारों विद्यार्थी देश विदेश में चिकित्सा, कानून, अभियांत्रिकी, विज्ञान, अध्ययन, अध्यापन के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

अभी हम इक्कीसवी सदी में चल रहे हैं लेकिन सेठ जी ने उस समय जो किया था यह उनकी दिव्य दृष्टि और मानवीय संवेदनाओं से भरे उनके मन और बुद्धि की ही अपने आप में बड़ी उपलब्धि थी।

सब समय प्रभु की ओर से मिलते रहते हैं, पर हम ही उनकी उपेक्षा कर देते हैं और उलझन, ईर्ष्या, परनिन्दा, अहमन्यता, असहिष्णुता, मलीनता और अज्ञान से घिर जाते हैं, इसलिए दुःख, अशान्ति, घृणा, द्वेष और प्रतिस्पर्धा बढ़ रहे हैं। जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद सर उठा रहे हैं।

मनुष्य यह भूलता जा रहा है कि समस्त विश्व का अस्तित्व संवेदनाओं के कारण है, वह यह भी भूलता जा रहा है कि संवेदनशील को ही सही दृष्टि मिलती है, उन्हें ही मानवता की तड़प दिखाई देती है।

जिस मानव का मन संवेदनशील है उसे महामानव बनते देर नहीं लगती, संवेदनशील व्यक्ति का चिन्तन भी श्रेष्ठ ही होगा, ऐसा व्यक्ति समस्त मानव जाति के उत्थान की ही बात सोचेगा, क्योंकि संसार के ज्यादातर महापुरूष मानसिक शक्ति के बल पर ही लक्ष्य तक पहुँचे, चाहे उनके पास धन बल, शारीरिक बल कम या ज्यादा क्यों न रहा हो, परमात्मा भी ऐसे सरल हृदय, श्रमरत शुभ कर्म करने वालों की सहायता के लिए निरन्तर तत्पर दिखते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात इस देश ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है पर इस प्रगति-विकास की शुरूआत स्वतंत्रता से पहले ही हो चुकी थी पूरे भारत भर में ऐसे हजारों उदाहरण हमें मिल जायेंगे। ऐसी ही एक मिसाल है महामना सेठ प्रताप अग्रवाल जी की, सन् 1971 में मैने बारहवीं कक्षा में प्रवेश लिया था उन दिनों यह कक्षा पूना बोर्ड के अंतर्गत प्री बोर्ड कहलाती थी, उसी समय मेरे उस कालेज का रजत जयन्ती समारोह भी मनाया जा रहा था, मेरे छोटे से शहर अमलनेर, जिला जलगाँव में यह एक मात्र कॉलेज था इसमें सह शिक्षा की सुविधा थी और यह पूना युनिवर्सिटी से संबद्ध था। कला, विज्ञान, वाणिज्य सभी संकायों की स्नात्कोत्तर तथा कुछ विषयों की पी.एचडी. तक सुविधा थी, इस विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय था महामना सेठ प्रताप अग्रवाल जी को, सेठ जी निस्संतान थे, सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति, उन्होंने केवल इस विश्वविद्यालय की स्थापना नहीं की अपितु इससे पहले अपनी जमा पूँजी से एक स्पिनिंग एण्ड विवींग मील की स्थापना की थी इसके पश्चात मील में काम करने वाले मजदूरों के रहने के लिए चॉलों का निर्माण किया पाठशाला खुलवाई थी, इसके पश्चात उन्होंने विद्यार्थियों के लिए प्रताप उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की भी स्थापना की वे रूके नहीं और उन्होंने एक भव्य राम मन्दिर और प्रताप चॅरीटेबल हॉस्पिटल भी बनवाया साथ-साथ, पास की दो तहसीलों में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्थापित किए और आगे चलकर अपनी विद्ववत्ता का परिचय देते हुए उन्होंने दर्शन शास्त्र के अध्ययन के लिए फिलासॉफी सेंटर की भी स्थापना की यह सेंटर भारत के गिने चुने सेंटरों में से एक है।

सेठ जी के कार्य से प्रेरित होकर शहर के कुछ धनवान प्रतिष्ठित किसान आगे बढ़े और उन्होंने भी विद्यार्थी और विद्यार्थिनियों के उच्चतर शिक्षा के लिए भवन बनाए और सारी व्यवस्था की, उनमें लड़कों के लिए कक्षा 5 से ग्यारहवीं तक की शिक्षा तथा सर गंगाराम सखाराम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा लड़कियों की शिक्षा के लिए श्रीमती द्रौपदी रामचन्द्र भांडारकर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आज भी हजारों विद्यार्थियों के जीवन में ज्ञान विज्ञान की रोशनी भर रहे हैं, हजारों विद्यार्थी देश विदेश में चिकित्सा, कानून, अभियांत्रिकी, विज्ञान, अध्ययन, अध्यापन के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

अभी हम इक्कीसवी सदी में चल रहे हैं लेकिन सेठ जी ने उस समय जो किया था यह उनकी दिव्य दृष्टि और मानवीय संवेदनाओं से भरे उनके मन और बुद्धि की ही अपने आप में बड़ी उपलब्धि थी।

जब-जब किसी सच्चे धार्मिक और आस्तिक का उल्लेख होगा तब-तब यह कहना गलत न होगा कि जिसका हृदय प्रेम सहानुभूति तथा संवेदना से भरा है वही सच्चा धार्मिक है तथा आस्तिक भी। और यह कहना भी पूरी तरह प्रतिपादित हो जाता है कि मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों से नहीं उसके सदविचार और सत्कर्म ही है। और परिवर्तन समय, स्थान और वस्तु का मोहताज नहीं होगा, वह तो मोहताज होता है ऐसे महामानव का जो ईमानदार है, सादगी पसंद, शांति पसन्द है, जिसको कुछ करने की लगन है, जो मेहनती है और जिसका जीवन दूसरों के लिए परोपकारी और अनुकरणीय है, और फिर जैसी दृष्टि होती है वैसी सृष्टि हो जाती है।

परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीडा सम नहि अधमाई।
निर्णय सकल पुराण वेदकर कहेऊँ तात जानहिं को विद नर।।